पंचम अध्याय

"डॉ. शंकर शेष के आलोच्य नाटकों में चित्रित समस्याओं का तौलनिक अध्ययन"

डॉ. शंकर शेष के आलोच्य नाटकों में चित्रित समस्याओं का तौलनिक अध्ययन

डॉ. शंकर शेष ने बड़ी सफलतापूर्वक आलोच्य नाटकों में समस्याओं का चित्रण किया है। जिस के कारण पाठक बेचैन हो जाता है। शेष की यह कोशिश है कि नाटक पढ़कर पाठक अपने भीतर झाँक कर अतंर्मुख होकर अपनी पहचान कर सके। जीवन यथार्थ की वैयक्तिक सीमाओं से लेकर व्यापक सामाजिक संदर्भों तक सभी को एकसाथ समेटकर चलने का प्रयत्न नाटककार ने किया है। "समस्त वैचारिक संकटों की स्वस्थ-अस्वस्थ लंगडी-लूली प्रतिक्रियाओं को अपने कटू रुप में समेटते हुए शेष ने नाट्य साहित्य को कैमरे की आँख बना दिया है। " [1]

नाटककार का यह प्रयास सामने रखते हुए उनके आलोच्य नाटकों के बीच एक एक समस्या को लेकर तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिससे हम नाटककार की विचारप्रणाली तथा चित्रित समस्याओं का गहनता के साथ अध्ययन कर सकते हैं।

5.1 पारिवारिक समस्या -

डॉ. शंकर शेष नें अपने आलोच्य नाटकों में परिवारों में स्थित अंतर्बाह्य टकराहटों के बीच जो समस्याओं का निर्माण होता है उसे बड़ी बखुबी से चित्रित किया है। आज भारत वर्ष में नब्बे प्रतिशत लोगों को रोटी कपडा और मकान की समस्या ने त्राही भगवान कर दिया है। समाज में स्थित हर वर्ग की जरुरतों का स्तर अलग अलग है। उन्हें पूरा न कर पाने के कारण जादातर लोग निराश हो जाते हैं। मकान की समस्या सर्वव्यापी रुप धारण कर चुकी है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण मकान की समस्या का उद्‌भव हुआ है। मकान की समस्या में व्याप्त हर पहलू ने व्यक्ति का जीवन यंत्रचलित पुर्जा बना दिया है। डॉ. शंकर शेष ने अपने हर नाटकों में इस समस्या के अलग अलग पहलू को प्रस्तुत करने में सफलता अर्जित की है।

घरौंदा में मध्यवर्ग में व्याप्त मकान की समस्या को उजागर किया है। हर पात्र अलग अलग पृष्टभूमि पर खड़ा है लेकिन सभी की समस्या एक ही है। चोपड़ा ने मकान के अभाव में शादी का इरादा ही

छोड़ दिया है और वाममार्ग की राह पर चल रहा है। सुदीप और छाया एक दूसरे से प्यार करते हैं लेकिन मकान के कमी से विवश होकर शादी नहीं कर सकते। गुहा की एक साल पहले शादी हुई है।लेकिन मकान का इन्तजाम न होने के कारण गाँव में नयी-नवेली दूल्हन को छोडकर, अकेला मुंबई में रहना पडता है। अब्दुल की शादी होकर ग्यारह साल हो गये हैं। फिर भी एक मकान जूटा न पाने के कारण पत्नी और बच्चों से सैकडों किलो मिटर दूर रहना पड रहा है। छाया के परिवार में एक छोटे से कमरे में परिवार के छ सदस्यों को रहना पडता है। 'एकांत' नाम की कोइ भी चीज पति पत्नी के बीच नहीं रही है। यह सब पारिवारिक रुप से टूटे हुए लोगों के खंड़ित प्रतिबिम्ब है। जो आज के तथाकथित स्तरीकरण की दौड में भागनेवाले किसी भी व्यक्ति के मुखौटे में देखे जा सकते हैं। विभिन्न उम्र के और सभी स्तर के पात्रों के माध्यम से मकान के अभाव की समस्या नाटककार ने प्रस्तुत की है। दो पात्रों को परेशान करनेवाली समस्या तो एकही है, लेकिन हर एक का पारिवारिक परिवेश भिन्न है। हर एक का मकान की समस्या के तरफ देखने का दृष्टिकोण भिन्न है। किंतू हर व्यक्ति अंदर ही अंदर टूटता जा रहा है। डॉ. शेष जी ने बड़ी सशक्त रुप में समस्याओं का चित्रण किया है।

5.2 आर्थिक समस्या -

'अर्थ' ही आज समाज में सर्व सत्ताधिश बन गया है। ''राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक सभी समस्याओं का मूल कारण यह ('अर्थ') है।'' [2] 'अर्थ' की शक्ति समाज के नियमक रुप में उभर रही है। सुविधाभोग की दिशाहीन दौड की जटिल समस्या के साथ व्यक्ति के 'स्तर' का मापदण्ड 'अर्थ' बन गया है उसे भी उन्होंने प्रस्तुत किया है। 'एक और द्रोणाचार्य' में लीला मंहगाई की समस्या को उठाती है।लेकिन उसकी सिर्फ़ झलक दिखाई देती है।परंतु 'घरौंदा' में छाया और सुदीप के हाथों से मकान का सपना महंगाई के कारण हर बार फिसलता हुआ आँख मिचौली का खेल खेलता है। नाटककार नें इस नाटक में आर्थिक समस्या को गंभीर रुप प्रदान किया है।

समस्या आलोच्य नाटकों में सबसे जादा 'पोस्टर' में नग्न यथार्थ रुप में आर्थिक समस्या चित्रित हुई है। मंहगाई के जमाने में एक रुपया मजदूरी पर जीवनयापन करनेवाले नंग-धडंग मजदूरों के जीवन की मजबुरी एक तरफ है। उसके विरुध्द दूसरी तरफ पूँजिपतियों का प्रतिक 'पटेल' भी इंम्पोंटेड व्हिस्की, पेट्रोल, होटेल के किराये आदि ऐय्याशी के सामानों की बढ़ती कीमतों से त्रस्त हैं। दो विभिन्न

परिवेशों में जीवनयापन करने में रत लोगों को तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए व्यंगपूर्ण शैली से चित्रण किया है। महंगाई की तुलना में बेरोजगारी की समस्या कम मात्रा में चित्रित हुई है।उसे 'एक और द्रोणाचार्य' में 'विमलेंदू की पत्नी का उदाहरण;' 'पोस्टर' में 'पटेल और सुखलाल के संवादों' से प्रस्तुत किया है। 'घरौंदा' में बडे बाबू की साली को नौकरी न मिलने की वजह से होनेवाली छटपटाहट, आदि दृश्यों के माध्यम से बेरोजगार का होनेवाला शोषण दृष्टिगोचर होता है।

'घरौंदा' से जादा 'एक और द्रोणाचार्य' में आर्थिक भ्रष्टाचार की समस्या यथार्थ रुप में उभरकर सामने आयी है। प्रेसिडेन्ट यह तो भ्रष्टाचार की प्रतिमूर्ति है। वह सज्जनता और प्रतिष्ठा की चादर ओढ़े नेता बनकर घुमता है। दूकान की तरह शिक्षा संस्था चलाता हुआ ग्रँट का उपयोग निजी कारोबार में करता है। अध्यापकों से पाँच सौ की रसीद लेकर तीन सौ वेतन देता है। प्रिन्सिपल के पद पर बैठे आदमी को पालतू बनाकर उसका इस्तेमाल करता है। इस नाटक में भ्रष्टाचारी प्रेसिडेन्ट का दोहरा 'चेहरा' दिखाने की कोशीश की है। जो भ्रष्टाचार करता है उसे छिपाने के लिए व्यस्त रहता है। तो उसके विरुध्द व्यक्ति-रेखा 'पोस्टर' में पटेल की है। वह भ्रष्टाचार को राजमार्ग बनाता है। निर्लज्जता के कारण वह खुलेआम उसकी स्वीकृति देता है। आर्थिक भ्रष्टाचार को सामान्य बात समझकर स्वीकार लेता है। उसके संवादों से पुलिस, नेता, सरकारी मुलाजीम आदि सभी लोगों की रिश्वतखोरी पर प्रकाश पडता है।

'पोस्टर' में पिछडी जातियों में व्याप्त आर्थिक समस्या अत्यंत दर्दनाक रुप में सामने आती हैं। मकान की समस्या तो बड़ी दूर की बात है मजदूर जो कपड़ा पहनते है उससे बहुत मुश्किलसे लज्जा रक्षण होता है। दिन में एक बार रुखी-सुखी रोटी खाकर ठंडे पानी से ही भुख और प्यास दोनों मिटानी पडती हैं। जीना महेंगा और मौत सस्ती है। उसी नाटक के समकक्ष 'एक और द्रोणाचार्य' में हृदयद्रावक दृश्य प्रस्तुत होता है। अश्वत्थामा को दूध के नाम पर आटे का घोल पिलाया जाता है। उसे वह पहचान भी नहीं पाता क्यों कि उसे दूध का स्वाद ही मालूम नहीं। अरविंद का आर्थिक स्तर आलोच्य नाटकों के दूसरे पात्रों से बहूत उँचा है लेकिन वह भी इससे छुटकारा पा नहीं सकता। कैन्सर ग्रस्त माँ, विधवा बहन, बेटे की पढ़ाई सभी खर्चों के बोझ तले दबता हुआ दिखाई देता है। विभिन्न स्तरों का पारिवारिक जीवन अर्थ के अभाव में और बढ़ती हुई जरुरतों के प्रभाव से घुटनपूर्ण होता जा रहा है। इसे नाटककारने सशक्त रुप में प्रस्तुत किया है। समुचा प्रस्तुतिकरण अत्याधिक यथार्थवादी ढ़ंग से हुआ है।

नाटककार के आलोच्य नाटकों में कहीं भी पात्रों के व्यक्तित्व, विषय, पृष्टभूमि, व्यक्ति के स्तर अथवा वर्ग में समान पुनरावृत्ति नहीं दिखाई देती। एक नाटक के अंतर्गत हो या अनेक नाटकों के अंतर्गत हो 'वैविध्य' गुण दिखाई देता है। 'पोस्टर' के मजदूर अत्यंत निम्नस्तर के हैं। उनसे आच्छी स्थिति में महानगरों में रहने वाले 'घरौंदा' के निम्न मध्य वर्ग के पात्र 'सुदीप, छाया, चोपड़ा, गुहा, अब्दूल्ला, बड़े बाबू' भी आर्थिक समस्यासे त्रस्त हैं। एक रुपया मजदूरी पर जीवनयापन करनेवाले, पोस्टर के मजदूर एक तरफ तो दूसरी तरफ एक रुपया चाय-पानी के लिए खर्च करनेवाले सुदीप और छाया दोनों को स्तर अलग है। लेकिन घुटन, विवशता एक ही है। सिर्फ़ संदर्भ बदल गये है। 'एक और द्रोणाचार्य' में पाँच सौ रुपये वेतन पाने पर भी अरविंद आर्थिक समस्याओं से त्रस्त है। सबसे व्यंग पूर्ण बात यह है की 'पोस्टर' में पटेल जैसा लाखों रुपये कमानेवाला पूँजीपति भी इससे छूटकारा पा नहीं सकता।

नाटककार आलोच्य नाटकों के माध्यम से अर्थिक समस्या चित्रित करते करते, अपरोक्ष रुप से यह तत्व स्पष्ट करना चाहते है कि अर्थ से जुड़ी समस्या 'अर्थ के मूल्य' पर नहीं वर्ग के स्तर पर आधारभूत होती है। पात्रों के संवादों के माध्यम से हर वर्ग के वर्तमान जीवन की टूटती कड़ियों और बिखराव का दर्शन होता है।

5.3 'नारी समस्या'-

डॉ. शंकर शेष जी के आलोच्य नाटकों में नारी पात्रों की संख्या पुरुष पात्रों की तुलना में अत्यल्प है। सभी नाटकों में प्राय: एक ही प्रमुख नारी पात्र दिखाई देता है। बाकी के नारी पात्र एक या दो दृश्य में न के बराबर आते हैं। 'पोस्टर' में चैती एक ही प्रमुख नारी पात्र है। दूसरे नारी पात्र समुह के रुप में उपस्थित होते हैं। 'घरौंदा' में छाया और सोडावाला दो ही नारी पात्र हैं। सोडावाला एक ही दृश्य में गौण रुप में उपस्थित होती हैं। उसके अस्तित्व का नाट्य या कथावस्तु पर कोई असर नहीं पडता। 'एक और द्रोणाचार्य' में लीला कृपी और अनुराधा तीन नारी पात्र हैं। पुरुष पात्रों की तुलना में कम समय नारी पति तक रंगमंच पर उपस्थित रहते हैं। परंतु आलोच्य नाटकों में नारी समस्या को प्रमुखता से उठाया गया है। पुरुष पात्रों के संवादों से नारी समस्या के 'विविध रुप' दिखाने की कोशिश की है।

आलोच्य नाटकों में दहेज समस्या, प्रेम की समस्या, वेश्या समस्या, यौन शोषण की समस्या, स्त्री-पुरुष सबंध की समस्या, शादी की समस्या, नौकर पेशा नारी की समस्या आदि अनेक

समस्याएँ आती हैं। लेकिन प्रमुख रुप से नारी के यौन शोषण की समस्या उभरकर सामने आती है। एक ही समस्या को अलग अलग नाटकों में भिन्न पृष्ठभूमि भिन्न कथावस्तु में परिस्थितिअनुरुप चित्रण करने में नाटककार ने बडी मात्रा में सफलता अर्जित की है। उनके प्रत्येक नाटकों में समस्या अलग रुप में अलग रंग में रंगी हुई दिखाई देती हैं।

'पोस्टर' में नारी के यौन शोषण जो पशुवत किया जाता है उसका चित्रण मिलता है। नाटक के प्रथम दृश्य में ताकत के बलबुतेपर एक गरीब लडकी पर किया गया 'अमानूष बलात्कार' की घटना का आया हुआ संदर्भ हो अथवा पटेल द्वारा कल्लू को कुचलकर चैती की पूरे गाँव के सामने उठाकर हवेली ले जाना हो ,ऐसी नारी यौन शोषण की घटनाएँ हररोज देखने के कारण गाँव के पुरुष और महिलाओं में आ गई निर्विकारता 'और' संवेदन शुन्यता, इसी की परिचायक है। पटेल और अफ़सर दोनों के बीच का संवाद मानवी मन में छीपे हैवानीयत को खुले आम प्रस्तुत करता है। नारी को केवल उपभोग की वस्तू, कामतृप्ति का साधन समझकर पाशवी उपभोग लेने की ताकतवर लोगों की यह प्रवृत्ति 'जंगल राज' की ओर ले जाती है।

'पोस्टर' में देहातों में व्याप्त नारी यौन शोषण के जंगलीपन को उजागर किया है। उसके विरुध्द महानगरों में व्याप्त यौन शोषण की अलग पध्दतियों को 'घरौंदा' के माध्यम से नाटककारने प्रस्तुत किया है। महानगरोंमे सुशिक्षित लोग होने के कारण खुले तौर से वे यौन शोषण नहीं कर सकतें। वहाँ दोहरे व्यक्तित्व की पध्दति का अवलंब किया जाता है। सुदीप द्वारा छाया का प्रेम के आड में शारीरिक उपभोग ले लेने की कोशिश करना यह सुसंस्कृत लोगों के समाज में सभ्यता का बुरखा ओढ़कर किया जानेवाली यौन शोषण ही है। बडे बाबू द्वारा पत्नी को नौकरी पाने के लिए शकल सुरत मायना रखती है ,यह बात समझाने की कोशिश करना इसमें अंतर्निहीत भविष्यकालीन शोषण ही दृष्टिगोचर होता है। सोडावाला द्वारा अपने शरीर का इस्तेमाल बॉस को प्रभावित करने के लिए साधन की तरह करने की कोशिश एक अलग ही प्रवृत्ति को उजागर करती है। जिसके अंतर्गत यौन शोषण करने लिए 'शोषित द्वारा ही स्वीकृति दी जाती है। उसके बदले में मनोवांछित लाभ उठाया जाता है।

'एक और द्रोणाचार्य' में शोषण की सभी प्रवृत्तियाँ सम्मिलित रुप से उपस्थित होती है। इस नाटक में ग्रामिण और महानगरीय संस्कृति की सभी प्रवृत्तियाँ घुलमिल गई है। विमलेन्दू के मौत के बाद उसकी बेसहरा, लाचार परंतु जवान पत्नी पर उसका साठ साल का बुढ़ा अफसर प्रमोशन का लालच

दिखाकर डोरे डालता है। एक और द्रोणाचार्य में दिखनेवाली यह प्रवृत्ति 'घरौंदा' में अस्पष्ट दिखाई देनेवाली शोषण समस्या का अधिक स्पष्ट रुप है। 'घरौंदा' में बडेबाबू द्वारा टेलिफोन पर की गई बातचित में इस समस्याका सिर्फ़ अस्पष्ट संकेत मिलता है। लेकिन 'एक और द्रोणाचार्य' में यह समस्या अधिक प्रकट रुप धारण करती हुई उपस्थित होती है। 'सत्ताधारी' प्रेसिडेन्ट पुत्र राजकुमार बलप्रयोग करके अनुराधापर बलात्कार की कोशिश करना, यह केस दबाने के लिए अनुराधा के पास गुंडे भिजवाकर उनके द्वारा उसपर बलात्कार करवाने की धमकी दिलवाना, प्रेसिडेन्ट चश्मदिद गवाह प्रिन्सिपल अरविंद को ब्लैकमैल करना, पाँच हजार रुपये फेंककर अनुराधा के पिता का विरोध खरिद लेना यह सभी काले कारनामे कृत्ये प्रेसिडेन्ट को भी 'नारी यौन शोषण' में भागिदार के रुप प्रस्तुत करती है। द्रौपदी चीरहरण के समय ''आकाश के टुकडे टुकडे कर देनेवाली मर्म-भेदी आवाज से द्रौपदी पुरुष जाति को पुकार रही थी।''[3] भरी राजसभा में 'द्रौपदी चिरहरण' घटना का आया हुआ संदर्भ प्राचीन काल से चलती आयी इस प्रवृत्ति को बेनकाब कर देता है।

संक्षेप में तात्पर्य यह निकालता है की नाटककार नें कथावस्तू की पृष्ठभूमि, परिस्थितियाँ वर्ग, स्तर आदि सभी बातों में योग्य संतुलन रखते हुए नारी समस्या को प्रस्तुत कर दिया है। 'पोस्टर' में नारी का यौन शोषण बलप्रयोग द्वारा किया जाता है। तो 'घरौंदा' में मुखौटे के आड में सभ्यता के परदे के पीछे से किया जानेवाला शोषण है। 'एक और द्रोणाचार्य' में इन दोनों पध्दतियों का मिलाजूला रुप प्रस्तुत किया है। जहाँ साम, दाम, दंड भेद की सारी रणनीतियों को अपनाया गया है। आलोच्य नाटकों में सभी वर्गों की स्त्रियों का चित्रण हुआ हैं। 'घरौंदा' की छाया 'एक और द्रोणाचार्य' की अनुराधा एक मध्यवर्गीय नारी, विमलेंदू की पत्नी महानगरीय मध्यवर्गीय नौकरपेशा नारी और द्रौपदी राजघराने का प्रतिनिधित्व करती है। चैती देहाती अनपढ़, गरीब, 'पिछडी' हुई नारियों का प्रतिनिधिक रुप है।

नारी महानगरीय हो अथवा पिछडी जातियों की मध्यवर्गीय हो अथवा निम्नवर्गीय शिक्षित हो अथवा गॅवार पुँजिपति हो अथवा आदिवासी उन सभी की समस्याए उस एक ही बिंदू पर आकर थम जाती है। कोई भी नारी कौनसे भी वर्ग की हो जब शोषक की तुलना में कमजोर हो जाती है तब उसका शोषण होता है।

पुरुष जाति ने सदा अतृप्ति बुझाने के लिए सत्ता, बल, पैसा, प्रलोभन आदि सभी साधनों का इस्तेमाल करते हुए नारी की भावनाओं के साथ खिलवाड की है। इसका चित्रण यथार्थ और बड़ी सूक्ष्मता के साथ डॉ. शंकर शेष जी ने किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

5.4 शिक्षा समस्या -

आज की शिक्षा-पध्दति अत्यंत दूषित हो चुकी है। मूल्यों के अवमूल्यन के कारण निरंतर पतन के गर्त में गिरती जा रही है। डॉ. शेष जी ने शिक्षा-पध्दति में व्याप्त समस्याओं को विविध संदर्भों के साथ चारित्रिक विश्लेषण द्वारा प्रस्तुत किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

निरक्षरता यह शिक्षा-पध्दति की अकार्यक्षमता का प्रतिक है। निरक्षरता के कारण मनुष्य को कठीनाईयोंका सामना करना पडता है। ऐसे निरक्षर व्यक्ति के कारण दूसरे लोगों का भी नुकसान होता है। यह नाटककारने अपने आलोच्य नाटकों के माध्यम से दिखाया है। 'पोस्टर' नाटक के अनपढ़ मजदूरों में अपने हक के बारे में जागृति नहीं है। अज्ञानवश पटेल द्वारा बुने हुए जाल में तडपते रहते है। उनका खुले आम आर्थिक, शारीरिक शोषण किया जाता । दूसरी तरफ 'एक और द्रोणाचार्य' में शिक्षा-संस्था चलानेवालों में से जादातर कमिटी मेंबर'अंगुठाछाप'हैं। जो स्वयं अनपढ़ हैं. उनसे हम अच्छे कार्य की 'वह भी शिक्षा क्षेत्र में' कैसे उम्मिद कर सकते हैं। इसी प्रकार एक ही समस्या के दो अलग, अलग रुप दिखाने की कोशिश नाटककार ने कर दी है।

आज शिक्षा और राजनीति अपनी अपनी सीमा रेखाएँ लॉघ कर एक दूसरे के क्षेत्र में दखलंदाजी कर रही है। इस समस्यापर भी डॉ. शेष जी ने हमारा ध्यान खिंचने की कोशिश की है। 'एक और द्रोणाचार्य' में अरविंद के जैसे अनेक अध्यापकों की नियुक्तियों और पदान्नतियों मे राजनीतिक नेताओंका अनुचित हस्तक्षेप किया जाता है। उसके बदलेमें कितनेही राजकुमारों को बचाकर और न जाने कितनी अनुराधाओंकी इज्जत से खेलने का नंगा नाच किया जाता है। कॉलेज की प्रबंध की समितियों के कितने ही 'प्रसिडेन्ट' कॉलेज की धनराशी का दुरुपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते है। नाटककार दिखाना चाहता है की आज भी कितने ही सत्यनिष्ठ और आदर्शवादी प्रोफेसर 'अरविंद' सत्ता के हाथों बिक जाते हैं। 'पदोन्नति' पाकर वे अपने घरोंके स्तर जितनेही उंचे उठाते जा रहे है, उतनेही वे अपने चंदू जैसे आदर्श वादी छात्रों और अनुराधा जैसी छात्रांओ की दृष्टिमें निचे-निचे गिरते - फिसलते चले जा रहे हैं।

प्रो. अरविंद के पतन की पोल खोलना एक प्रकारसे समुचे शिक्षा - संसार के वर्तमान को गागर में सागर भरने में सफल प्रयोग कहा जा सकता है। अरविंद जैसे अध्यापक कुल मिलाकर शिक्षक के रुप में छात्रोंको क्या देते है? सिर्फ़ अर्थशास्त्र पर भाषण। लेकिन ऐसा कुछ भी नही देते जो उनके जीवन को अर्थ देता। गुरु द्रोणाचार्य जैसा सर्वश्रेष्ठ आचार्य अपने घरेलू दारिद्रय से बदला लेने की हिंसक भावना में चूर होकर अपने आप को सत्ता के हाथों बेच देते है। यह बिक्री 'शरीर' की अपेक्षा 'आत्मा' की थी अंत:करण की थी। समाजिक चेतनाओं जागरुकता की थी, नीर-क्षीर विवेक की थी। 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक हमे अपने सामाजिक दायित्व - बोध और चेतना के प्रति प्रेरित स्फुरीत करने में विशेष भूमिका संपन्न करता है।

दूसरे नाटकों की तुलना में 'एक और द्रोणाचार्य' में शिक्षा- समस्या, विशाल रुप धारण करके प्रस्तुत होती है। आत्मावलोकन और आत्म-विश्लेषण करने के लिए वह प्रवृत्त करती है। समाज को बदलनाही शिक्षा का उद्देश है।और यही इस नाटक का भी प्रमुख उद्देश है। नाटककार ने समस्या चित्रित करते हुए पाठक को उसके ''सामजिक दायित्व- बोध'' के प्रति जागरुक किया है। पाठक का ध्यान उस संकट की ओर खिचा है। जीस पर समय से पहले ध्यान नही दिया गया तो समस्त शिक्षा व्यवस्था की गरीमा को कलंकीत होने से कोई नही बचा सकेगा।

5.6 मूल्य विघटन : समस्या -

परिवर्तन यह सृष्टि का नियम है। आज पुराने मूल्यों पर संकट के बादल मंडरा रहे है। उपभोगवादी बनकर सिर्फ़ भौतिक उन्नति की आकांक्षा रखकर मानव अपनी आत्मा और भावनाओं को कुचलकर यांत्रिक और आत्मकेंद्रीत सभ्यता की राह पकड रहा है। आज समाजिक, धार्मिक, पारिवारिक राजनीतिक, शिक्षा सभी क्षेत्रों में जो अवमूल्यन हो रहा है। उसे अपने नाटकों में डॉ. शेष जी ने अंकित किया है।

डॉ. शंकर शेष जी ने 'पोस्टर' 'एक और द्रोणाचार्य' में मूल्यविघटन के परिणाम दिखाए है। घरौंदा मे परिणामों साथ 'सुदीप के खत' के माध्यम से नयी दिशा नयी उम्मिद प्रतिपादीत की है। अपने रोजमर्रा के दिखाई देनेवाले पात्रों के माध्यम से व्यक्तिगत, सामाजिक आंतरिक और बाह्य सभी टूटते हुए मूल्यों का लेखाजोखा पेश किया है। नाटक के पठन के समय लगता है कि इस नाटकों के पात्रों में हम में से

कोई भी हो सकता है। यह सिर्फ़ एक व्यक्ति अथवा परिवार की त्रासदी कहकर टाला नहीं जा सकता। यह एक दर्पन है जो आस-पास-पड़ोस के जीवन का यथावत प्रतिबिम्ब दिखलाता है। और आत्मपरिक्षण करने के लिए मजबूर कर देता है।

'एक और द्रोणाचार्य' और 'घरौंदा' में मूल्य विघटन की समस्या चित्रण में एक साम्य दिखाई देता है। मूल्यों को तोडनेवाले पात्रों के अंतरद्वंद्व द्वारा मूल्यों का महत्व प्रतिपादित करने की कोशिश की है। 'एक और द्रोणाचार्य' में प्रो. अरविंद और द्रोणाचार्य 'पोस्टर' में सुदीप लगातार मूल्यों को तोडने की कोशिश करते है। लेकिन बादमें उनके मन मे चले अंतरद्वंद्व दवारा सही मूल्यों की पहचान भी नाटककार ने कराई है। वर्तमान जीवन में 'अर्थ' की प्रभावक्षमता को नाटककार ने प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। आलोच्य नाटकों के जादातर पात्र 'अर्थ' के पीछे पडकर अनुचित आचरण करने के कारण गैरमूल्यों के पाश में जकड़ जाते है। उनकी आत्मा मर जाती है खो जाती है और वे आत्महीन हो जाते है। नाटककार ने ऐसे लौकीक दृष्टि से संपन्न परंतु स्वार्थी मनुष्य की निर्भत्सना करते हुए उसकी पशुता पर कड़ा व्यंग कसा है।

डॉ. शंकर शेष जी ने अपने नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' में, मूल्य विघटन की समस्या के प्रति पाठक का ध्यान खिंचा है। कर्तव्यपालन में उदासिन वृत्ति रखने की प्रवृत्ति को अपने नाटकों में दर्शाया है। 'एक और द्रोणाचार्य' में अपनी चमड़ी बचाने की कोशिश में यदू का शिक्षक धर्म को भूल जाना, भ्रष्टाचार मे साथ देने के लिए अरविंद के उपर दबाव डालने की कोशिश करना, आदर्शवादीता का स्वांगरचानेवाला प्रा. अरविंद का पदोन्नती पाकर प्रिन्सिपल बनने के लिए अपने आपको बेच देना ,विमलेंदू की चिता के सामने अध्यापक वर्ग द्वारा झुट पर झुट बोलना आदि प्रवृत्तियाँ शिक्षक धर्म को कलंकित कर देती है। संस्था चालक प्रेसिडेन्ट निजी कारोबार की तरह शिक्षा संस्था चलाता है। तो दूसरी तरफ 'पोस्टर' में सरकारी नौकर, पुलिस, फॉरेस्ट अफिसर आदि में व्याप्त विविध प्रसंगों में आए हुए विविध संदर्भों से के भ्रष्टाचार के किस्सों को भी दर्शाकर कर्तव्यपथ से विन्मुख होने की प्रवृत्तियों को प्रस्तुत कर दिया है।

इसके साथ व्यक्तिगत मूल्यों की टूटन भी स्पष्टता से दिखाई हुई दृष्टिगोचर होती है। पत्नी का धर्म यह होता है कि वह अपने पति को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करे। 'एक और द्रोणाचार्य' में लीला अपने पति अरविंद के पास सिफ़ारिश करती है की सिन्हा के 'साहब के पुत्र' के गुण बढ़ाए। बाद में सुविधा भोगीनी बनकर, नारीत्व की भावना भूलाकर वह 'अनुराधा पर बलात्कार करनेवाले

राजकुमार का साथ देने के लिए अरविंद को कहती है। दूसरी तरफ राजकीय अन्न की दासता स्वीकारते हुए एक शिक्षक होते हुए भी द्रोणाचार्य ने अपनी न्याय बुध्दि बेच डाली है। एकलव्य का अंगुठा काटने का प्रसंग हो अथवा कर्ण जैसे होनहार विद्यार्थी के विकासपथ पर रोड़े अटकाना हो अथवा 'द्रौपदी चिरहरण' के प्रसंग में चुप्पी साधते हुए अपने कर्तव्य को भूलने की वृत्ति हो, सभी जगहों पर पक्षपात, क्रूरता भरी महत्वाकांक्षा ने उन्हें कभी सही आदमी नहीं बनने दिया।

आज महानगरीय जीवन के बदलते परिवेक्ष में सामाजिक नैतिक मूल्यों के मानदंण्ड बदल रहे है। 'घरौंदा' नाटक के माध्यम से युवावर्ग मे बढ़ती हुई विलासिता, कामुकता और चारित्र्यहीन और आवारा बनने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को उजागर किया है। चोपड़ा की प्रवृत्ति इसी में अंतर्भुत है। साथ ही साथ लॉज के कमरे में ठहरने के लिए आनेवाली और ठहरने के बाद जानेवाली हर लडकी की तरफ लॉज के काऊंटर पर बैठा आदमी घुरकर देखता है। उसकी 'अर्थ' खोजने की कोशिश (पीछे का जो राज है वह) महानगरों में व्याप्त उपभोगवादी मूल्यहीनता का नंगा सच सामने लाती है। सुदीप का अमीर बनने का शार्टकट तलाश ने के बाद सामाजिकता और नैतिकता के उपर का विश्वास उठ जाता है। भावुकता का उसकी दृष्टि से बेकारकी चीज बनती है। पैसों की प्राप्ति के लिए वह अपनी प्रेमिका और प्रेमभावना की निलामी करता है। मोदी के मौत के लिए प्रयत्नरत रहता है। आदि सभी सदंर्भों सें नाटककार ने बढ़ती हुई वाणिक वृत्ति, क्रय-विक्रय की भावना, यांत्रिक सभ्यता की अमानुषता एवं आत्महीनता आदि को प्रकट किया है। आज का महानगरीय जीवन 'अर्थ' और काम की दृष्टि से कितना अधिक घुटनपूर्ण होता जा रहा है इसको वस्तु-विन्यास में सशक्त रुप में नाटककारने प्रस्तुत किया है। यह समुचा प्रस्तुतिकरण अत्याधिक यथार्थवादी ढंग से हुआ है।

नाटककार ने 'एक और द्रोणाचार्य' व्यवहारीक धरातल पर सामाजिक मूल्यों का होनेवाला विघटन चित्रित किया है। जो 'अर्थ' से संबंध रखता है शिक्षा व्यवस्था, राजनीति सेवाधर्म क्षेत्र इस में अंर्तनिहीत हैं। तो दूसरी तरफ घरौंदा नाटक के माध्यम से व्यक्तिगत मूल्यों के विघटन को दर्शाया है। जिसका उद्‌भाव अतृप्ति, इच्छा, आकांक्षाएँ आदि के परिणाम स्वरुप होता है। कुछ प्रमुख पात्रों के माध्यम से मूल्य समस्या को चित्रित कर के खंड़ित व्यक्तित्व चेतना को अधिक स्पष्ट करने का प्रयास नाटककार ने किया है। ''मूल्यहिनता के इस युग में मानव बेबस, असाह्य निरिहसा बन गया है।''[4] व्यक्ति का स्तर, वर्ग कौनसा भी हो उसे दमित करनेवाली परिस्थितियाँ कौनसी भी हो लेकिन हर जगहों पर यह समस्या इतना

भयावह और उग्र रुप ले चुकी है। हर व्यक्ति अपने आपमें लघुता, क्षुद्रता का अनुभव कर रहा है। यह कडूआ सत्य पूर्ण स्वरुप में आलोच्य नाटकों में उभरकर सामने आ जाता है।

भौतिकवादी यांत्रिक संस्कृति मनुष्य की आत्मा की हत्या कर रही है। उसे भावनाविहीन बन रही है। उसी के साथ निघृण अत्याचार, स्वार्थ, लोभ, मोह, हैवानियत, कामलोलूपता, द्वेष आदि विकृतियों का डॉ. शेष जी ने अपने आलोच्य नाटकों के माध्यम से निषेध व्यक्त किया है। व्यक्ति और व्यक्ति के बीच प्रेम, करुणा, बंधुता, विश्वास का भाव फले इसके लिए नाटककार सदा कार्यरत रहता हुआ दिखाई देता है। आलोच्य नाटकों मे सिर्फ़ घटनाओं का वर्णन नहीं है बल्कि रोजमर्रा के जीवन में होनेवाले मूल्यों के अवमूल्यन का लेखाजोखा पेश किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

5.6 वर्गसंघर्ष : समस्या -

'' संघर्ष के अभाव में नाटक - नाटक नही हो सकता विप्लव, विद्रोह और विच्छेद तो समस्या नाटक का अपरिहार्य अंग है। '' [5] समाज में व्याप्त हर वर्ग (स्तर) धर्म, अर्थ, विचार, सभ्यता, भाषा, संस्कृति, भूपृष्ठ, और रक्त संबंध के आधार पर टिका रहता है। जब इन आधार क्षेत्रों के बीच टकाराव हो जाते हैं तब अपने अस्तित्व को बनाए रखने हेतू दो वर्गों के बीच मे संघर्ष की स्थिति निर्माण हो जाती है तब वर्ग संघर्ष की समस्या का उद्‌भव हो जाता है। डॉ. शंकर शेष जी ने आलोच्य नाटाकों में वर्गसंघर्ष के सुक्ष्म बिंदूओं को भी प्रस्तुत किया है। इसके साथ समस्या चित्रण में ग्रामिण और महानगरीय दो विभिन्न परिवेशों में व्याप्त वर्ग संघर्ष को समान न्याय दिया है। 'पोस्टर' नाटक के तुलना में 'घरौंदा' और 'एक और द्रोणाचार्य' मे वर्ग संघर्ष की भावना कम है लेकिन जो है वह अत्यंत सक्षम पृष्टीभूमिपर सूक्ष्मता से चित्रित हुई है।

प्राचीन काल से 'धर्म' यह वर्ग संघर्ष का प्रमुख कारण रह चुका है। 'पोस्टर' के प्रथम दृश्य में ही एक श्रोता के कथन के द्वारा धार्मिक वर्ग संघर्ष की विभीषिका नग्न रुप में प्रकट होती है। सत्य का पक्षधर बनकर अत्याचारी के खिलाफ़ खडे रहने का परिणाम सिर्फ़ उस 'श्रोता 1' को ही नहीं उसके जाति के सभी लोगों को भूगताना पडने की संभावना देहातों में व्याप्त जातिवादी वर्ग संघर्ष को अभिव्यक्त करती है।

'एक और द्रोणाचार्य' में द्रोणाचार्य उच्चवर्ग के प्रतिनिधि और एकलव्य निम्नवर्ग (शुद्र वर्ग) के 'प्रतिनिधिक' पात्र के रुप में उभरकर सामने आते है। निम्नवर्गीय लोग भविष्य में एकलव्य से शिक्षा प्राप्त

कर के क्षत्रियों के मुकाबले में शक्तिशाली न हो इसी कारण स्वयंभू एकलव्य का अंगुठा गुरुदक्षिणा के तौर पर द्रोण मांगते है। उच्चवर्गीयों का श्रेष्टत्व अबाधित रखने हेतू द्रोणाचार्य द्वारा की गई कृति वर्गसंघर्ष का घिनौना रुप है। पोस्टर नाटक में धार्मिक वगसंघर्ष 'सूच्य' रुप में प्रकट हुआ है। तो दूसरी तरफ 'एक और द्रोणाचार्य' में दृश्य रुप में प्रकट हुआ है।

अपने नाटकों के माध्यम से नाटककार ने समाज में व्याप्त कुरीतियों का पर्दाफ़ाश किया है। साथ ही साथ धर्म के नाम पर होनेवाले कुकृत्यों पर तीक्ष्ण व्यंग बाण छोडे है। उसके साथ धार्मिक उन्माद, स्वार्थपरता और पाखंड़ को भी प्रस्तुत किया है। 'मार्क्सवाद' के सिध्दांतों के अनुरुप 'अर्थ' से जुड़े वगसंघर्ष को भी नाटककार अपने आलोच्य नाटकों में स्थान दिया है। 'पोस्टर' नाटक में कल्लू और चैती के संवादों से अपरोक्ष रुप में और पटेल और सुखराम के संवादों से प्रत्यक्ष रुप में नक्सलवादी वर्गसंघर्ष की झलक दिखाई देती है। पडोस के गाँव में पूंजिपति पटेल लोगोंकी नक्सलवादियों के द्वारा की गई हत्या के मिलने वाले संदर्भ नाटक को यथार्थवाद की पृष्टभूमि पर खड़ा कर देता हैं। चैती द्वारा हँसी मजाक में शहर से उठाकर लाया बेजान 'पोस्टर' मजदूरों में चेतना जागृत कर देता है। वर्गसंघर्ष के लिए मददगार साबित होता है। उसी से ही प्रेरणा लेकर और अधिक 'पोस्टरो' का निर्माण होता है। मजदूरों के मूक संघर्ष का फल मजदूरी में बढ़ौती के रुप मे मिलता है। इस के विरुध्द 'घरौंदा' में वर्गसंघर्ष का स्वरुप व्यक्तिगत होता हुआ दिखाई देता है। सुदीप के मन में व्याप्त अतृप्ति, इर्ष्या यह 'वर्ग संघर्ष' का मुखौटा लेकर मोदी जैसे पूंजिपति किंतू सीधे सरल इन्सान के खिलाफ़ लडने के लिए उसे मजबुर कर देती है। इसी सुदीप का दूसरा रुप हमे 'एक और द्रोणाचार्य' में गुरु द्रोणाचार्य में दिखाई देता है। निर्धन द्रोणाचार्य राजा दृपद से धन की जगह अपमान प्राप्त करता है। शिष्यों में युध्द का उन्माद भर कर उसका प्रतिशोध लेना चाहता है। व्यक्तिगत अपमान को वर्गसंघर्ष के रुप में उठाना चाहता है।

वर्ग संघर्ष का प्रमुख कारण एक वर्ग का दूसरे वर्ग पर किया हुआ अत्याचार भी रहता है। नारी का किया गया यौन शोषण यह वर्ग संघर्ष खड़ा कर देता है। 'पोस्टर' में चैती स्वभाव से ही विद्रोही है। उसके संवादों में विद्रोह धर्मिता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। जब 'चैती को हवेली भेजने' की समस्या खड़ी हो जाती है। तब चैती कल्लू में संघर्ष की चेतना जगाती है। तब कल्लू पोस्टर का हथियार और मौन संघर्ष की योजना लेकर पटेल के सामने डटकर खड़ा होता है। यह वर्गसंघर्ष का प्रारंभ बिंदू है। चैती द्वारा पटेल के मूँह पर थूँकने की घटना सभी मजदूरों में वर्ग संघर्ष की भावना प्रज्वलीत होने के लिए बल प्रदान कर देती है।

कल्लू के द्वारा पटेल को कोडे से पिटवाना और मजदूरों द्वारा उसका साथ दिया जाना 'वर्ग संघर्ष' की चरमसीमा हैं। बाद में कल्लू का क्या हुआ? यह सवाल सिर्फ़ घटना दर्शक रह जाता है। लेकिन इस से हमे कौनसी सिख मिलती है। किस प्रकार की प्रेरणा मिलती है यह बात जादा महत्वपूर्ण है।

वर्ग संघर्ष का मूल कारण ढूँढ़ने का प्रयत्न 'पोस्टर' में प्रथम दृश्य में किया है। बाद में वर्ग संघर्ष का क्रमबध्द विकास, अपेक्षाएँ, गलतियाँ और उसकी परिणती आदि सभी की कीर्तनकार के संवादों के माध्यम से जानकारी मिलती है। तो 'वर्ग संघर्ष' का स्वरुप किस प्रकार का होना चाहिए इसके बारें में निश्चित दिशा 'घरौंदा' के अंतिम दृश्य में सुदीप के ... भेजे गये पत्र के द्वारा मिलती है।

इसी प्रकार डॉ. शंकर शेष जी के आलोच्य नाटकों में वर्गसंघर्ष की समस्या सक्षम पृष्टभूमि पर चित्रित हुई है।

5.7 धार्मिक समस्या -

मानव सदा धर्म से प्रभावित रहा है। प्राचीन काल से समाज की नियमक शक्ति के रुप में धर्म कार्यरत रह चुका है। आलोच्य नाटकों के माध्यम से नाटककार दिखाना चाहता है कि धर्म के ठेकेदारों के कारण उसे किस तरह तोड-मरोडकर पेश करते हुए शोषण का साधन बनाया जाता है। आलोच्य नाटकों के द्वारा नाटककार ने 'धार्मिक समस्या में' अंतर्निहीत शोषण पर तीखा प्रहार किया है। साथ ही साथ नीतिवादी और मानवतावादी धर्ममार्ग की प्रतिस्थापना करने का प्रयत्न किया है।

'पोस्टर' में पटेल द्वारा बुलानेपर कथीत अखंडानंद महाराज मजदूरों को प्रलोभन के साथ भय दिखाकर मजदूरों में अंधश्रध्दाए फैलाता हुआ पटेल का शोषण मार्ग आसान बनाता है। खाली हाथ से वस्तूएँ निकालना कैन्सर जैसा भयानक रोग तंत्र-मंत्र से ठिक करने के बारे में बोलना, स्वर्ग-नरक की तसविरें खिंचकर दिखलाना, आदि संदर्भों के सहायता से अंधश्रध्दा की पोल, नाटककार ने खोल दी है। अनपढ़ गवॉर आदिवासी लोगों में स्थित अंधश्रध्दा के दर्शन कराने के साथ उन्होंने 'घरौंदा' के माध्यम से आधुनिकता से रंगे लोगों के मन में व्याप्त अंधश्रध्दाओं का अंधेरा भी दिखलाया है। घरौंदा नाटक में मिश्रा की भविष्यवाणी पर विश्वास रखकर निष्क्रिय बनकर सुदीप अपना भविष्य खतरे में डालता है। तो दूसरी तरफ मोदी अपने धंदे में जो मुनाफा हो रहा है उसे अपनी क्षमता न समझकर नयी नवेली पत्नी का नसीब समझता है। 'पोस्टर' के मजदूर और 'घरौंदा' के सुदीप और मोदी में एक महत्वपूर्ण फ़र्क है। पोस्टर में मजदूरों को

अंधश्रध्दाओं का गुलाम बनाया जाता है। लेकिन 'घरौंदा' में सुदीप और मोदी अपने मन से गुलामी में कुदते हैं।

'एक और द्रोणाचार्य' में तो धार्मिक समस्या का अलगही पहलू दिखाया गया है। उसमें नीति नियमों का वास्ता देकर गलत मान्यताओं के माध्यम से होनेवाले धार्मिक शोषण को प्रस्तुत किया है। नाटककार संवादों के माध्यम से अपरोक्ष रुप से यह कहना चाहता है। यहाँ सिर्फ़ एकलव्य का अंगुठा काटकर नहीं लिया गया। तो उसकी प्रतिभा को कुचलकर भविष्य में उसके जाति के विकास कुंठित करके उच्चवर्गियों का श्रेष्टत्व कम होने की संभावना नष्ट कर दि ' है। इसी बात की अलग कड़ी 'पोस्टर' में फिर से दिखाई पडती है। श्रोता -1 बलात्कारी का नाम बतलाने से इसलिए इन्कार कर देता है की 'रहस्य उद्घाटन' के लिए उस के साथ उसकि जाति के लोगों को दोषी मानकर उनपर अत्याचार किये जाएंगे। इस घटना के माध्यम से जातिप्रथा, धार्मिक संघर्ष के भयावह रुप का दर्शन अपरोक्ष रुप से होता है। धर्म के नाम पर युगों-युगों से चलते आ रहे शोषण की नाटकाकारने उजागर किया है।

नाटककारने अपने नाटकों के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों का पर्दाफ़ाश किया है। धर्म के नामपर होनेवाले कुकृत्योंपर तीक्ष्ण व्यंग बाण छोडे है। धार्मिक पाखंड और औपचारिकता को 'गंभीरएवं वास्तव' में प्रस्तुत किया है। बेतूकी बेमतलब बातों के आडंबरों का पर्दाफ़ाश कर उन्हें गहरे प्रतिकात्मक व्यंगपूर्ण ढ़ंग से प्रस्तुत किया है।

5.8 न्याय और कानून की समस्या -

समाज को सुनियंत्रित करने के लिए न्याय और कानून व्यवस्था की स्थापना की गई है। लेकिन आज अन्याय, अत्याचार, गुनहगारी दिन-दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रही है। न्याय व्यवस्था और कानून का कार्य और कर्तव्य, सिध्दांत के सामने खड़ी समस्याओं का लेखाजोखा नाटककार ने प्रस्तुत किया है।

न्याय कानून की समस्या प्रमुख रुप में 'पोस्टर' नाटक में बड़ी मात्रा में आ गई है। 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में थोडी कम मात्रा में है। 'घरौंदा' में यह समस्या न के बराबर देखने के लिए मिलती है।

आलोच्य नाटकों के माध्यम से नाटककार यह तथ्य प्रस्तुत करना चाहता है की आज का कानून गुनहगारों का इस कदर मदतगार बन गया है। पढ़े लिखे लोगों से लेकर देहातों के अनपढ़ लोगों तक कानून के प्रति अविश्वास और परायेपन की भावना समान रुप से फैल गयी है। 'पोस्टर' में जब मंदिर के पीछवाडे में लडकी पर बलात्कार होता है तब यह अत्याचार देखने के बावजूद कोई गवाही देने के लिए सामने नहीं आता। दूसरी तरफ 'एक और द्रोणाचार्य' में प्रा. विमलेंदू की हत्या चौराहेपर सैंकडों लोगों के सामने गुंडे लोग करते है लेकिन एक भी गवाह बनने के लिए तैयार नहीं होता। चश्मदिद गवाह पोस्टर का अनपढ़ गवाँर मजदूर हो अथवा 'एक और द्रोणाचार्य' का पढ़ालिखा हो दोनों के स्तर में फासला भले ही हो किंन्तू प्रवृत्तियाँ एक ही है। 'पोस्टर' में लडकी पर बलात्कार करने के बाद ताकत का इस्तेमाल करके अत्याचारी लडकी और उसके बाप का मूँह बंद करवाता है। तो दूसरी तरफ 'एक और द्रोणाचार्य' में बलात्कार की कोशिश की केस दबाने के लिए अनुराधा के बाप का मूँह पाँच हजार रुपये देकर बंद किया जाता है। एक तरफ ताकत का इस्तेमाल तो दूसरी तरफ पैसों का इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन इस समस्या मे एक महत्वपूर्ण बात दिखाई देती है कि 'पोस्टर' की बलात्कारीत लड़की अनपढ़ होने के कारण अन्याय के खिलाफ़ लड़ने की हिम्मत नहीं जूटा पाती। किंतू 'एक और द्रोणाचार्य' की अनुराधा नई शिक्षा से मिले आत्मविश्वास के बलबुतेपर किसी का सहारा न मिलने पर भी 'बलात्कार की कोशिश' करनेवाले राजकुमार का जीना मुश्किल कर देती है।

आलोच्य नाटकों में एक बात उभरकर सामने आती है कि नाटककार ने कहीं भी कानून के रक्षक पुलिस को संवारने की कोशिश नहीं की है। उल्टा वर्दी के पीछे का घिनौना चेहरा दिखाने की कोशिश की है। 'एक और द्रोणाचार्य' में प्रेसिडेन्ट द्वारा पैसे मिलने पर पुलिस बेकसूर न्याय के पक्षधर छात्रों पर डंडे बरसाती है। 'पोस्टर' में तो अनेक बार 'पटेल' अपने कथन द्वारा पुलिस अफ़सरों को रिश्वत देने की बात कुबुल करता है। एक दृश्य में तो फॉरेस्ट अफ़सर आदिवासी महिला का यौन शोषण करने की इच्छा प्रकट करता है। नाटक के अंतीम दृश्य में पटेल के हाथों बिक गयी पुलिस कल्लू और उसके साथियों को आकर पिटती है और झुटे इल्जाम लगाकर जेल भिजवाती है। कीर्तनकार के संवादों से 'ट्रायबल वेलफेअर डिपार्टमेन्ट' में चलनेवाले भ्रष्टाचार की व्यंगपूर्ण शब्दों में आलोचना की है। 'घरौंदा' में मध्यवर्गीय लोगों को फसानेवाले बिल्डर का बाल भी बाका नहीं होता बल्कि उसके कारनामों की वजह

से गुहा जैसे सीधे आदमी को आत्महत्या के लिए मजबूर होना पडता है। यह घटना महानगरों में व्याप्त न्याय और कानून की समस्या को प्रस्तुत करती है।

डॉ. शेष जी महानगरों से लेकर देहातों तक शिक्षित हो अथवा अनपढ़ आदिवासी सभी से संबंधीत न्याय और कानून व्यवस्था के हर पक्ष के पहलूओं को बड़ी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत करते हुए दृष्टिगोचर होते है।

न्याय और कानून समस्या के अध्ययन के उपरान्त यह दिखाई देता है की नाटकाकार ने महानगरों की तुलना में देहातों में, पिछडे हुए लोगों में जादा मात्रा में न्याय और कानून की बिगडती हुई स्थिति को महसूस किया है। यह दिखाने की कोशिश की है कि न्याय और कानून की समस्या कितना भयावह मोड ले सकती है। नाटककार अपने नाटकों से यह विचार रखना चाहता है कि आज न्याय और कानून की बिगड़ती हुई स्थिति का जिम्मेदार संवेदनाहीन समाजमन हैं। इसलिए हमे जागृति का पहला कदम उठाना चाहिए। यदि यह नहीं किया गया तो भ्रष्ट राजनेता, शोषक पूंजिपति और पुलिस का शर्मनाक गठबंधन सामान्य व्यक्ति का जीना हराम कर देगा।

5.9 क्रूरता भरी महत्वाकांक्षा : की समस्या -

महत्वाकांक्षा उस हथियार की तरह होती है जो डॉक्टर के पास पहूँचते ही जीवनदान देती है। तो खुनी के हाथ पडतेही जीवन ले भी सकती है। महत्वाकांक्षा रखना मानव के उन्नती का एक मार्ग है। उससे जीवन को नया मोड मिलता है लेकिन उसके पीछे का हेतू कार्य-कारण भाव यदि सही न हो तो वह अनेक लोगों के दु:ख का कारण बन जाती है। स्वार्थ, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, इर्षा, अतृप्ति, प्रतिशोध की भावना से भरी महत्वाकांक्षा व्यक्ति के अध:पतन के और उन्मुख करती है। ऐसेही पात्र डॉ. शंकर शेष जी के नाटकों में दिखाई देते है।

आलोच्य नाटकों में 'घरौंदा' का सुदीप 'पोस्टर' का पटेल और 'एक और द्रोणाचार्य' में द्रोणाचार्य और प्रेसिडेन्ट ऐसी ही महत्वाकांक्षा रखते हैं। वह आत्मा की हत्या करती है। उनके आलोच्य नाटकों में एक भी पात्र की समस्या दूसरेसे मेल नहीं खाती। हर एक का 'एक अलग पहलू' है। 'घरौंदा' के सुदीप की 'श्रम के बिना अमीर बनने की' महत्वाकांक्षा उसे कहीं का नहीं छोडती है। उसे अपने 'प्रेम' का भी सौदा करने के लिए उसकाती है। वह थोडा बहुत धन तो प्राप्त करता है लेकिन वह 'प्रेम' का जीवनरस खो

देता है। उसकी तुलना में 'एक और द्रोणाचार्य' में द्रोणाचार्य पग-पग पर इस के कारण क्षुद्र बनता जाता है। और सैकडों के विनाश का कारण बन जाता है। याचक के रुप में राजा दृपद के पास जानेपर धन के बदले अपमान पाकर बदला लेने की 'महत्वाकांक्षा' को जन्म देता है। उसके परिणाम स्वरुप ऐसी पीढ़ी का निर्माण करता है जो केवल युध्द की भाषा बोलती है।

अर्जुन को सर्वश्रेष्ट धनुर्धर बनाने का आशिर्वाद दिया था. उसे सच करने के लिए द्रोणाचार्य एकलव्य का अंगुठा काटकर उसके प्रतिभा के केंद्रबिंदू को ही नष्ट करता है। उसकी तुलना में प्रेसिडेन्ट कुछ कम नहीं है। मंत्री बनने की महत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए अपने बेटे द्वारा की गई बलात्कार करने जैसी घिनौने कोशिशपर परदा डाल देता है। वह केस दबाने के लिए साम, दाम, दंड, भेद सभी का इस्तेमाल करता है 'पोस्टर' के पटेल की कृरता से भरी महत्वाकांक्षा तो आदिवासीयों पर अत्याचार का कहर बरसाती है। कल्लू मजदूर की नवोढ़ा पत्नी चैती का 'पूरी तरह' से पाने की इच्छा रखनेवाला पटेल उसके लिए बेकसूर कल्लू को जेल भिजवाकर अपनी प्यास बुझाता है।

आलोच्य नाटकों में सुदीप, द्रोणाचार्य, प्रेसिडेन्ट और पटेल यह समस्या ग्रस्त पात्र हैं। नाटककार ने सुदीप के माध्यम से धन के कारण निर्माण होने वाली महत्वाकांक्षा, द्रोणाचार्य के माध्यम से 'व्यक्ति की भावनाओं'के कारण निर्मित महत्वाकांक्षा, प्रेसिडेन्ट के माध्यम से'पद और प्रतिष्ठा'कायम रखने की इच्छा से निर्माण महत्वाकांक्षा और पटेल में'विकृत मनोवृत्ति और काम भावना'से उत्पन्न महत्वकांक्षा दिखाई है। इसी तरह नाटककार ने हर 'स्तर' के विभिन्न पात्रों के बिच विभिन्न कारणों की वजह से उत्पन्न महत्वाकांक्षा और उसके पूर्ति के लिए उन्होंने क्रूरता का लिया हुआ सहारा इससे उत्पन्न समस्या सभी पक्षों के हर पहलू को प्रस्तुत करने में सफलता अर्जित की है।

5.10 'व्यवस्था का दमनचक्र' की समस्या -

समाज की उन्नत्ति करने के लिए अनुशासीत करने के लिए, शांति, समृध्दि के लिए समाज व्यवस्था का निर्माण हुआ लेकिन कुछ ताकतवर लोग अपनी धाक जमाने के लिए 'अर्थ' और 'सत्ता' की शक्ति का नाजायज़ फायदा उठाकर मन चाहे व्यवहार करने लगे। मानवी आत्मापर यांत्रिक, भावनाहीन, पशुत्वपूर्ण वृत्तियोंका प्रभाव बढ़ता गया परिणामस्वरुप व्यवस्था के दमनचक्र की समस्या का आरंभ हुआ।

आलोच्य नाटकों में हर बडा पात्र अपना अस्तित्व बनाये रखने की कोशिश करता रहता है। और यह करने के लिए दूसरों का कितना भी नुकसान हो उसे पर्वा नहीं। वे सिर्फ़ आतंक फैलाकर अपना स्थान सुरक्षित रखना चाहते हैं। 'एक और द्रोणाचार्य' में विमलेंदू की हत्या बिच चौराहेपर करने की वजह 'लोगों में आतंक फैलाना' यही है। इस मकसद में वे गुंडे अथवा 'पोस्टर' में बलात्कार करनेवाला 'बडा आदमी' कामयाब हो जाते हैं। इस अत्याचार का परिणाम 'देखनेवालों पर' पडता है। कोई भी गवाही देने के लिए तैयार नहीं होता। क्योंकिउन्हें मौत का भय सताता है। मौत का यह भय आदमी को जिंदा रहते हुए भी मूर्दा बना देता है। पटेल इसी बात को अच्छि तरह से समझता है। लोगों पर अपनी धाक जमाये रखने के लिए वह बडे बडे कलेक्टर ए.पी. फॉरेस्ट अफ़सरों को अपने घर में शराब की दावत देता है। उन्हें पैसे फेंककर खरीद लेता है। इस बात से भी 'जो मजदूर' प्रभावित नहीं होते उन्हें झुठा इल्जाम लगाकर हवालात में बंद करवा देता है। उनकी झोपड़ियों में खुले आम आग लगवाता है। यह भी कम पड गया तो हत्या करवाता है। इसी कारण सभी मजदूर एक रुपया मजदूरीपर उसके यहाँ भूखे नंगे रहकर काम करते हैं।

अपने दमनचक्र को खुली आम मान्यता देनेवाला पटेल से भिन्न कार्यपध्दतिवाला 'एक और द्रोणाचार्य' का प्रसिडेन्ट है। वह समाज के सामने समाजसेवक का चेहरा रखता है। तो दूसरी तरफ़ शिक्षा व्यवस्था का उपयोग हथियार की तरह करता है। प्रिन्सिपल पद पर बैठे व्यक्ति को अपमान तंत्र, अपनाकर, गालियाँ देकर लाचार बना देता है। यदि नहीं माना तो गबन के झुटे इल्जाम में फ़सांने की धमकियाँ देकर उसके स्वाभिमान, सच्चाई, शील, विवेक सभी भावनाओंका दमन करके उनका इस्तेमाल अपने काम के लिए करता है। चंदू का पिता विरोधी गुट का होने के कारण चंदू को झुटे इल्जाम में कॉलेज से निकाल देता है। अरविंद को 'अनुराधा' के केस में ब्लैकमैल करके गवाही देने से रोकता है। अनुराधा के पिता का मूँह पाँच हजार रुपये देकर बंद करवा देता है। अनुराधा न माननेपर 'गुंडों द्वारा' बलात्कार करवाने की धमकी भी दिलवाता है। सभी अध्यापकों को कम वेतन देकर काम करवा लेता है। द्रोणाचार्य 'गुरुदक्षिणा' के आड़ में उच्चवर्गियों के हित की रक्षा करने के लिए एकलव्य का अंगुठा काट लेता है।

इन सभी पात्रों के पास तो पैसा था। ताकत थी। लेकिन 'घरौंदा' में मोदी के दफ़्तर में काम करने वाले मध्यमवर्गिय बड़े बाबू के तेवर कुछ कम नहीं हैं। वह भी अपने छोटे से ओहोदे का इस्तेमाल

करता हुआ अपनी साली को नौकरी न मिलने की वजह से आया क्रोध छाया पर उतारता है। नौकरी के पहले ही दिन ढ़ेर सारा काम उसपर लादकर पग-पग पर अपमान करता हुआ-अपना दमनचक्र चलाता है।

नाटककार यह अपरोक्ष संदेश देना चाहता है कि जहाँ का असमतोल हो चाहे वह शक्ति पैसे की, ताकत की अथवा पद, सत्ता की हो अपने निजी स्वार्थ के लिए आदमी उसका इस्तेमाल गलत ढंग से करता है। उससे ही व्यवस्था का दमनचक्र समस्या का आरंभ होता है।

5.11 'मनोवैज्ञानिक समस्या -

मनोवैज्ञानिक समस्या मानव के जीवन की तृटियों, अपुर्णताओं, अतृप्ति से उत्पन्न मन की प्रतिक्रियाओं का प्रतिक है। यह अत्यंत जटिल समस्या है। ''जिन कथानकों का निर्माण आज हो रहा है या हो चुका है उसमें प्रमुख पात्र आप बीती सुनाने का प्रयास करता है,वहाँ वह अपने अतीत के विश्लेषण के द्वारा अपनी वर्तमान समस्याओंका कार्यकारण के सुत्र ढुँढता है।'' [6]

आलोच्य नाटकों में नाटककार ने मनोवैज्ञानिक समस्या के हर पहलू को दिखाया है। इसमें 'घरौंदा' यह प्रमुखता से मध्यवर्गिय जीवन का सशक्त चित्र है। इसमें सभी पात्र अंदर से टूटे हुए और लघुता से आकंदित है। नाटककार ने सुदीप और छाया के माध्यम से अधुनिक युवक,युवती की मानसिक दशा को प्रस्तुत किया है। प्रेम संबंध और शारीरिक भुख के बिच होनेवाली टकराहट के साथ पैसों की कमी के कारण होनेवाली घुटन, मूल्यों को तोडने की कोशिश सभी को चित्रित करने में सफलता अर्जित की है। सभी पात्रों में कम अधिक मात्रा में सामाजिक प्रतिष्ठा-वैयक्तिक प्रवृत्तियों का तकाजा, दरिद्रता से द्वेष, पारिवारिक जिम्मेदारीयाँ और कर्तव्य के प्रति भावनात्मक आक्रोश,कामभावना और नैतिक मर्यादा के प्रति विद्रोह का भाव सभी का चित्रण सुक्ष्मता से नाटककार ने किया है।

'घरौंदा' में गुहा का पात्र सामने तो नहीं आता किंतु उसके पत्नी का आया हुआ एक खत उन पति-पत्नी की मानसिक दशा को दर्शाता है। खत पढ़कर छाया और सुदीप का अंदर से हिल जाना, छाया का अपने सपनों को छोडकर 'चाल का कमरा' के वास्तव को स्वीकारना,उसी वक्त भाई गोविंद की पढ़ाई में जमा पूंजी खर्च होना सभी दृश्यों में उसके भीतरी अंतरद्वंद्व को नाटककार ने सशक्त अभिव्यक्ति के साथ प्रकट किया है। सुदीप और छाया के पास तो कुछ भी नहीं था। लेकिन पैसा, सत्ता सबकुछ पास होनेपर भी कुछ न कर पाने के कारण होनेवाली छटपटाहट 'एक और द्रोणाचार्य' में अरविंद और द्रोणाचार्य

में दिखाई देती है। व्यवस्था के साथ समझौता करते करते उनका मन विक्षोभ, वितृष्णा और ग्लानी से भर जाता है। लेकिन उनकी अकर्मण्यता, निकम्मापन और आत्मविश्वास विहीनता 'घरौंदा' के सुदीप की मनोदशा से मेल खाती है। तिनों पात्रों के सामने भौतिक समस्या अलग अलग है लेकिन मनोदशा एक ही है।

'एक और द्रोणाचार्य' में अरविंद के सामने सवाल खड़ा होता है कि न्याय का साथ दे या अन्याय कर फल 'प्रिन्सिपल का पद' प्राप्त करे। उसी वक्त अन्याय का साथ देकर अपनी व्यक्तिगत उन्नति प्राप्त करता है। लेकिन अपनी प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा, विवेक को खोता है। दूसरी तरफ षडयंत्र का सहारा लेकर सुदीप धन कमाता है लेकिन ज़िंदगी से हार जाता है। दोनों की छटपटाहट नाटककार ने प्रभावपूर्ण चित्रित की है। तीसरी तरफ 'राजकिय अन्न की दासता' ने द्रोणाचार्य को इतना सुविधा भोगी बनाया की वह दासता की भावना में डूब गया। वस्त्रहरण की घटना बाद द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा और कृपी के बिच का संवाद तो मनोवैज्ञानिक समस्या को दर्शाता है। सभी भावभावनाओं का यह विस्फोट है। इसी के साथ एकलव्य की गुरुदक्षिणा के बाद अर्जुन के मन में आयी अपराध की भावना और क्षुद्रता का एहसास दोनों में मनोवैज्ञानिक समस्या दृष्टिगोचर होती है।

'घरौंदा' के मोदी का चरित्र्य मानव का एक अलगही रुप प्रस्तुत करता है। उसका छाया में अपने स्वर्गवासी पत्नी का प्रतिबिम्ब देखना। उसे सिर्फ़ हररोज देखने के लिए नौकरी पर रखना। उसके साथ शादी के बाद दोनों में फिर तुलना करना। उस तरह का व्यवहार करना सभी घटनाओं में उसकी दमीत वासनाएँ और इच्छाओ की मनोवैज्ञानिक गुथ्थी नाटककार ने सुलझाने की कोशिश की है। सुदीप पर बेशुमार प्रेम करनेवाली छाया मोदी के साथ शादी करने के बाद सेवा और पति भक्ति के आदर्शों को अपने व्यवहार द्वारा, निरुपित करती हुई। भारतिय नारी की भाव भावनाओं का रुप दिखाती है।

भावनाओं का मर जाना यह सबसे बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्या है। 'पोस्टर' के मजदूर जब गाँव के पटेल द्वारा उनकी बहू, बेटी, पत्नी का होनेवाले यौन शोषण को आम बात समझकर हाँसी मजाक में सह लेते हैं। इनसे बडी कौनसी समस्या हो सकती है। आलोच्य नाटकों में वैयक्तिक कुंण्ठा, आत्मपीडन, मानव विकृतियों तथा व्यथा, दु:ख, निराशा, क्रोध, द्वेष आदि का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण सफलता से हुआ है।

निष्कर्ष -

युग का पथप्रदर्शन करने के साहित्यकार के मुख्य दायित्व को निभाने में डॉ. शंकर शेष कामयाब रहे हैं। सीमित भावभूमि से उठकर सुविस्तृत मार्गपर चलते हुए उन्होंने 'घरौंदा', 'एक और द्रोणाचार्य' और 'पोस्टर' नाटक का लेखन किया है। उनके विवेच्य नाटकों के बीच समस्याओं को जोडनेवाली एक शृंखला विद्यमान दिखाई देती है। उनकी रचना धर्मिता मूल रुप से मानवतावादी मूल्यों से प्रेरित रही है।

आर्थिक समस्या के उद्‌भव के लिए उन्होंने 'अर्थ' से जादा 'वर्ग के स्तर' को जिम्मेदार मानते हुए दिखाई देते है। 'पोस्टर' में सामाजिक न्याय का संबंध धन के समान बटवारे से जोड़ा है। इससे उनपर साम्यवाद का प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखाई देता है। उन्होंने सभी स्तर और सभी वर्गो की नारी समस्याओं का चित्रण किया है। कमसे कम नारी पात्रों के द्‌वारा नारी समस्या का व्यापक रुप में चित्रण करना उनकी खाँसियत रही है। उदाहरण के तौर पर नारी समस्या पर आधारित पोस्टर में एकही नारी पात्र है। उन्होंने विवेच्य नाटकों में नारी समस्या का चित्रण करते वक्त .. .. .. की राजघराने , मध्यमवर्गीय , गरीब, आदिवासी, नोकरपेशा अंगुठाछाप, आदि सभी स्तर की नारीयों का होनेवाला शोषण चित्रि किया है। 'मूल्य विघटन' की समस्या चित्रण में उनकी विशेषता यह रहीं की मूल्यों को कुचलनेवाले पात्रों के अंतरद्‌वंद्‌व द्‌वारा मूल्यों का महत्व प्रतिपादन किया है।

उनके विवेच्य नाटकों में 'वर्गसंघर्ष' की समस्या हर बार अलग रुप में प्रकट होती है। पोस्टर में मजदूर वर्ग समुह द्‌वारा किया गया संघर्ष है। जिसका प्रमुख आधार 'अर्थ' और'नारी का यौन शोषण का प्रतिकार' है। घरौंदा में मध्यवर्ग के प्रतिनिधिक पात्र के रुप में सुदीप आता है। वह गुहा को दूसरे वर्ग का प्रतिनिधि समजकर स्वार्थ और बदले की भावना से प्रेरित होकर वर्ग संघर्ष करता है। और 'एक और द्रोणाचार्य' में धर्म को धरातलपर वर्ग संघर्ष खड़ा है।

डॉ. शेष जी ने धर्म के नामपर होने वाले कुकृत्यों पर तीक्ष्ण व्यंग बाण छोडकर 'धार्मिक' समस्या चित्रित की है। साथ ही महानगरों से लेकर आदिवासियों में न्याय और कानून की बिगड़ति हुई स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया है।

धर्म के नाम पर होनेवाले कुकृत्योंपर तीक्ष्ण व्यंग्य बाण छोडकर धार्मिक समस्या की पोल खोल दी है। साथ ही देहातों से लेकर महानगरोंतक सभी धारातल पर न्याय और कानून की बिगडती हुई स्थिति को दर्शाने में नाटककार ने सफलता पायी है।

विवेच्य नाटकों में पटेल, सुदीप, द्रोणाचार्य, प्रेसिडेंन्ट इन पात्रों में आतिरिक्त कामभावना, धन की लालसा, अहंकार भाव औद पद-प्रतिष्ठा का लालच 'कृरता भरी महत्वाकांक्षा' का निर्माण कर देता है। यह बतलाकर नाटककार ने पाठकों को आगाह किया है। सशक्त शब्द सामथ्ये के बलपर उन्होंने मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निर्वाह सफलता पूर्वक किया है। उनके हर महत्वपूर्ण दृश्य में पात्रोंका आंतरिक संघर्ष दिखाई देता है।

डॉ. शेष जी ने अपनी रचना धर्मिता से सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति देते हुए मानविय मूल्यों की प्रतिष्ठापना करने का स्तुत्य प्रयास किया है। उनकी समस्या चित्रण में संघर्ष एवं हार है लेकिन निराशा का स्वर कहीं भी नही। नयी प्रेरणा नयी आशा नया संदेश देना उनका उद्देश रहा है।

संदर्भ सूची -

1.	डॉ. सुरेश एवं विणा गौतम	- राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष	- पृ. 17
2.	डॉ. विमल भास्कर	- हिंदी में समस्या साहित्य	- पृ. 141
3.	डॉ. शंकर शेष	- एक और द्रोणाचार्य	- पृ. 82
4.	डॉ. सुरेश एवं विणा गौतम	- राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष	- पृ. 112
5.	डॉ. विमल भास्कर	- हिंदी में समस्या साहित्य	- पृ. 132
6.	डॉ. विमल भास्कर	- हिंदी में समस्या साहित्य	- पृ. 119